अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

सेमेस्टर- प्रथम(01) स्नातकोत्तर

प्रश्न पत्र- तृतीय(cc-03)

रासो साहित्य की सामान्य विशेषताएँ

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा

12:3

Scanned with CamScanner

रासो साहित्य / काव्य की सामान्य विशेषताएँ

रासो साहित्य मूलत: सामन्ती व्यवस्था, प्रकृति और संस्कार से उपजा हुआ साहित्य है जिसका मुख्य स्वर वीरत्व का रहा है। इस साहित्य के रचनाकार हिन्दू राजपूत राजाश्रय में रहने वाले चारण या भाट थे। समाज में उनका स्थान सम्मान का था, क्योंकि उनका जुडाव सीधे राजा से होता था। ये चारण या भाट कलापारखी और कला- रचना में निपुण होते थे। ये युध्द कला भी जानते थे, जो युध्द होने पर अपनी सेना की अगुवाई विरुदावली गा-गाकर किया करते थे। ये राजाओं, आश्रयदाताओं, वीर पुरुषों तथा सैनिकों के वीरोचित युध्द घटनाओं को केवल बढा-चढाकर ही नहीं, उसकी यथार्थपरक स्थितिओं एवं सन्दर्भों को भी बारीकी के साथ चित्रित करते थे। वीरोचित भावनाओं के वर्णन के लिए इन्होंने ''रासक या रासो'' छन्द का प्रयोग किया था, क्योंकि यह छन्द इस भावना को सम्प्रेषित करने के लिए अनुकूल था। इसीलिए इनके द्वारा रचित साहित्य को 'रासो साहित्य' कहा गया। इस काव्य की सामान्य विशेषताएँ इस प्रकार है:-

१. संदिग्ध रचनाएें :-

इस काल में उपलब्ध होनेवाली प्राय: सभी रासो रचनाएँ ऐतिहासिकता की दृष्टि से संदिग्ध मानी जाती है। इस काल में रचित चार काव्य ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं - 'खुमान रासो', 'बिसलदेव रासो' 'पृथ्वीराज रासो' तथा 'परमाल रासो'। भाषा शैली और विषय सामग्री की दृष्टि से इन ग्रन्थों के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि इनमें निरन्तर कई शताब्दियों तक परिवर्तन और परिवर्धन होते रहे हैं। यह परिवर्तन और परिवर्धन इतने प्रचुर मात्रा में हुए हैं कि इनका मूल्य रुप ही दब गया है। यह भी निश्चित नहीं कहा जा सकता कि ये ग्रन्थ आश्रयदाताओं के समय में ही लिखे गये हो।

Scanned with CamScanner

२. ऐतिहासिकता का अभाव :-

आदिकालीन रासो रचनाओं में इतिहास प्रसिध्द चरित्र नायकों को लिया गया है किन्तु उनका वर्णन युध्द इतिहास की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। इन कवियों द्वारा दिये गए संवत् और तिथियाँ इतिहास से मेल नहीं रखती। इन काव्यों में इतिहास की अपेक्षा कल्पना का बाहुल्य है। इतिहास के विषय को लेकर चलनेवाले कवियों मे जो सावधनता अपेक्षित होती है, वह इन काव्य निर्माताओं में नही। इन कवियों ने इतिहास को अतिशयोक्ति और कल्पना पर नौछाकर कर दिया है। यहाँ तक कि पृथ्वीराज रासो में पृथ्वीराज को उन राजाओं का भी विजयी माना गया है जो उनसे कही शताब्दियों पूर्व अथवा पश्चात विद्यमान थे।

३. युध्दों का सजीव वर्णन :-

युध्दों का सजीव वर्णन इन ग्रन्थों का प्रमुख विषय है और यह वर्णन इतना सजीव बन पडा है कि कदाचित संस्कृत साहित्य भी इस दिशा में इन काव्यों की ओड नहीं कर सकता। इन कवियों का युध्द वर्णन अत्यन्त सजीव बन पड़ा है, कारण चारण कवि केवल मसिजीवी ही नहीं था समय आने पर हाथ में तलवार लेकर लढना भी जानता था। दोनों ओर की सेनाओं को लढते समय युध्द में प्रयुक्त आक्रमण की रीतियों का जैसा सजीव चित्रण इस युग के कवियों ने किया है वैसा परिवर्ती कवियों में नहीं दिखाई देता। उनकी वीर रचनावली में शस्त्रों की झनकार स्पष्ट दिखाई पडती है और उनके युध्द वर्णन के सजीव चित्रण वीर हृदय में आज भी वीरता पैदा करते है। यह समय अंतरिक कलहो' और बाहरी आक्रमणों का समय था, अतः अपने अपने आश्रयदाताओं को युध्द के लिए उत्तेजित करना इस काल के कवि का प्रमुख कर्तव्य-सा बन गया था।

४. युध्दों का मूल कनक, कामिनी और भूमि :-

वीरगाथा काल का अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट रुप से दिखाई देती है कि इस युग में युध्द निरन्तर हुआ करने थे। युध्द के मूल में कनक, कामिनी अथवा भूमि में से कोई एक मुख्य कारण के रुप में कार्य करते हुए दिखाई देती है। अधिकतर नारियाँ ही युध्द का प्रमुख कारण हुआ करती थी। साथ ही साथ वीर गाथा काव्य में कुछ ऐसे भी नरेश थे जो अपना साम्राज्य विस्तार करना चाहते थे। कभी-कभी राजकाज चलाने के लिए धन की आवश्यकता पडती थी। तात्पर्य, युध्द के मूल में यह तीनों चीजें कार्यरत थी। रासो काव्य इसका प्रमाण है।

५. संकुचित राष्ट्रीयता :-

आदिकालीन राजा स्वयम् शुरवीर पौरुष से परिपूर्ण थे लेकिन उनमें संकुचित राष्ट्रीयता थी। उस समय के राजाओं ने अपने पचास सौ गाँवों को ही राष्ट्र समझ रख था, उनमें व्यापक राष्ट्रीयता की भावना का अभाव था। अजमेर और दिल्ली के राजाओं को कन्नोज और कलिंग के समृध्द होने अथवा उजाड जाने पर कोई हर्ष या विषाद (दुःख) नहीं होता था। इसका प्रभाव इन चारण कवियों पर भी पडा था। इन कवियों ने जीविका प्राप्ति के लिए अपने आश्रयदाताओं की स्तुति मुक्त कंठ से की है। देशद्रोही जयचंद को भी देशप्रेमी कहलाने वाले

Scanned with CamScanner

वीर चारण उस समय थे। तात्पर्य यह है कि यदि उस समय राष्ट्र का अर्थ व्यापक रुप में लिया गया होता, तो निश्चित रुप से हमारे देश का मानचित्र आज कुछ और होता, पर उस समय के राजाओं ने इस बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। यह हमारे देश का महादुर्भाग्य था।

६. वीर और श्रृन्गार रस :-

इन रासो ग्रन्थों में वीर तथा श्रृन्गार रस का अद्‌भूत सम्मिश्रण है। उस समय युध्द का बाजार चारों ओर गर्म था। वीर रस का जितना सुन्दर परिपाक इस काव्य में मिलता है, उतना हिन्दी साहित्य के किसी भी काल में नही मिलता। उस समय की वीरता का आदर्श निम्न पंक्तियों में स्पष्ट होता है :-

''बारह बरस लै कुकर जिये और तेरह लै जिये सियार।
बरस अठारह क्षत्री जिये आगे जीवन को धिक्कार।।''

आदिकालीन युध्दों का एकमात्र कारण नारी लिप्सा है। युध्दों का मूल कारण नारी को कल्पित किया गया है, अतः श्रृन्गार रस का भी इस साहित्य में जमकर सजीव वर्णन हुआ है।

७. नारी के वीर रुप का वर्णन :-

वीरगाथाकालीन कवियों ने नारी के वीर रुप का चित्रण किया है। उस जमाने में नारियाँ वीर पुरुष को पति अथवा पुत्र के रुप में पाना अपना सौभाग्य समझती थी। अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करते हुए वीरगति को प्राप्त करने वाले अपने पति का समाचार प्राप्त करके (पाकर) राजपूत रमणियाँ प्रसन्नता का अनुभव करती थी। नारी अपने पति को हर रुप से वीर रुप में देखनेके लिये आतुर रहती थी। वह यह नहीं चाहती थी कि उसका पति युध्द भूमि से मुँह मोड कर पराजय को स्वीकार कर के वापस आए। ऐसा होने पर वह खुद को लज्ञित समझती थी। वीरगाथाकालीन नारी का वीर रुप निम्न पंक्तियों में स्पष्ट हो जाता है -

'' भल्ला हुआ जूँ मारिया बहिनि हवारा कंतु,
लज्जेजं तु वयांसिअहु जै भग्गा धरू एंतु।

(हे बहिन ! भला हुआ जो मेरा पति युध्द में मारा गया यदि वह भागकर आ जाता तो मुझे अपनी सखियों से लज्जित होना पडता।)

८. आश्रयदाताओं की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा :-

वीरगाथाकालीन चारण या भाट कवियों ने अपने अपने आश्रयदाताओं की मुक्तकंठ से झूठी प्रशंसा की है। इन कवियों ने अपने राजाओं को ब्रह्म, इन्द्र आदि देवताओं से भी बढकर शूर तथा वीर बताया है। उस समय सामन्तवाद का बोलबाला था। राजा को सर्वोपरि माना जाता था। उस समय जो छोटे छोटे राजा थे वे हमेशा साम्राज्य विस्तार के लिए आपस में लढते थे। उनमें केन्द्रिय सत्ता को हाथियाने की एक ओढ सी लगी हुई थी। इन राजाश्रित कवियों ने अपने अपने आश्रयदाताओं की खुलकर प्रशंसा की है, जो वास्तविकता से उत्पन्न अतिशयोक्ति से परिपूर्ण है।

Scanned with CamScanner

९. जन–जीवन से सम्पर्क नहीं :–

चारण कवि अपने आश्रयदाताओं की स्तुति में लगे हुए थे, अतः इनकी रचनाओं में राजाओं तथा सामन्तों का जीवन ही उभर कर सामने आया है। इन कवियों ने 'स्वामिन सुखाय' काव्य की रचना की है, 'सामान्य जन सुखाय ' की नहीं। अतः इनकी रचनाओं में सामान्य जन जीवन के घात–प्रतिघातों का अभाव है। राजाओं का गुणगान करना ही इन कवियों का उद्देश्य था। परिणामतः साधारण जनता के प्रति इनका दृष्टिकोन अपेक्षाकृत हीन ही रहा। उस काल में जन समुदाय की स्थिति साधरण थी। इसका वर्णन करने के लिये आदिकाल के कवियों के पास अवकाश नहीं था। चारण कवियों की विस्तार भरी अभिव्यक्ति में मूलतः राजा, सामन्त, योध्दा और युध्द के वर्ण विषय रहे है, समाज की प्रायः उपेक्षा हुई है।

१० प्रकृति–चित्रण :–

इस साहित्य में प्रकृति का आलम्बन और उद्दीपन दोनों रुपों में चित्रण किया है। नगर, नदी,पर्वत आदि का वस्तुवर्णन भी सुन्दर बन पडा है। अधिकतर इन कवियों ने प्रकृति का चित्रण उद्दीपन रुप में ही किया हैं। प्रकृति का स्वतंत्र रुप में चित्रण किये हुए स्थान इन काव्यों में थोडे हो मिलते है। प्रकृति चित्रण की जो उदात्त शैली छायावादी काव्य में मिलती है, वह इस काल के काव्य में नहीं। कहीं कहीं तो इन कवियों ने प्रकृति चित्रण में नाम परिगत शैली को अपनाया है, जहाँ रसोन्द्रेक के स्थान पर निरसता आ गई है।

११ काव्य के दो रुप :–

आदिकालीन रासो रचनाएँ मुक्तक और प्रबन्ध दोनों रुपों में मिलती हैं। मुक्तक काव्य का प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ 'बीसलदेव रासो' है तथा प्रबन्ध काव्य का प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ जिसे महाकाव्य कहा जाता है 'पृथ्वीराज रासो ' है। इन दो काव्य रुपों के अतिरिक्त इस साहित्य में और दूसरा काव्य का कोई रुप नही मिलता है। इनमें काव्य रुपों की विविधता का अभाव है। न तो इस समय दृश्य काव्य लिखा गया और न ही गद्य लिखने का प्रयत्न किसी ने किया। इस समय की कुछ रचनाएँ अप्रामाणिक और कुछ नोटिस मात्र है। 'जयचन्द प्रकाश' तथा 'जयमयंक जसचंद्रिका' इस कोटि के ग्रंथ हैं।

१२ रासो ग्रन्थ :–

आदिकालीन साहित्यिक ग्रन्थों के साथ 'रासो' शब्द जुडा हुआ है। जो कि काव्य शब्द का पर्यायवाची है। 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति विभिन्न विद्वान अपने–अपने ढंग से अलग अलग मानते हैं। आ. शुक्लजी 'रासो' शब्द का सम्बन्ध रहस्य से मानते हैं, लेकिन 'वीसलदेव रासो' में इसका अर्थ रसायन का परिचायक है जिसका सम्बन्ध मूल कथानक से है। मूल रुप में रासो शब्द एक छन्द के लिये प्रयुक्त हुआ है, जिसका उपयोग अपभ्रंश साहित्य में हुआ है।

१३ छन्दों का विविध मुखी प्रयोग :–

वीरगाथाकालीन रासो साहित्य में छन्द के क्षेत्र में तो मानों एक क्रान्ति ही हो गयी है। छन्दों का जितना विविधमुखी प्रयोग उस साहित्य में हुआ है उतना उसके पूर्ववर्ती साहित्य में नहीं हुआ। दोहा, त्रोटक,सोरठा, छप्पय, गाथा, सटक, रोला, उल्लाला और

Scanned with CamScanner

कुण्डलियाँ आदि छन्दों का प्रयोग बडी कलात्मकता के साथ किया गया है। 'पृथ्वीराज रासो' में छन्दों का परिवर्तन और प्रयोग बहुत अधिक मात्रा में हुआ है, लेकिन कहीं भी मूल कथानक में बाधा उत्पन्न नहीं होती। डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी पृथ्वीराज रासो के सम्बन्ध में लिखते हैं– ''रासो के छन्द जब बदलते हैं, तो श्रोता के ह्रदय में प्रसंगानुकूल कम्पन उत्पन्न करते हैं।''

१४ अलन्कार :-

वीरगाथाकालीन चारण कवियों ने अलन्कारों पर विशेष ध्यान नहीं दिया, फिर भी उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा आदि अलन्कारों का स्थान-स्थान पर सुन्दर प्रयोग देखा जा सकता है। पृथ्वीराज रासो में बहुत सारे अलन्कारों का चित्रण न होते हुए भी कुछ अलन्कारों का प्रयोग सुन्दर रुप में हुआ है, जो सजीव एवं सुन्दर हैं। उत्प्रेक्षा तथा अतिशयोक्ति अलन्कारों का सुन्दर वर्णन देखिये –

'' मनहु कन्त ससिमान कला सोलह सो बन्हिमा।
बौह वैस सजिता समिप अमृत रस पिन्नीपा।।''

इस तरह इस साहित्य में अलन्कारों का प्रयोग चाहे कम संख्या में हुआ है, लेकिन जितने भी अलन्कारों का प्रयोग हुआ है, वह सजीव एवं सुन्दर हैं।

१५ डिंगल और पिंगल भाषा :-

वीरगाथाकालीन रासो काव्य की एक अन्य उल्लेखनिय विशेषता है डिंगल और पिंगल भाषा का प्रयोग। उस समय की साहित्यिक राजस्थानी भाषा को आज के विद्वान डिंगल नाम से जानते हैं। यह भाषा वीरत्व के स्वर के लिये बहुत उपयुक्त भाषा है। वीरगाथाओं के रचयिता चारण कवि अपनी कविता राजदरबार में ऊँचे स्वर में गाते या पढते थे। डिंगल भाषा उसके उपयुक्त थी। प्रायः इसका प्रयोग युध्द वर्णन के लिए ही हुआ है। पिंगल भाषा का प्रयोग प्रायः विवाह और प्रेम के प्रसंगों के वर्णन के लिए किया जाता था। इस तरह युध्द वर्णन के लिये डिंगल और प्रेम या विवाह वर्णन के लिये पिंगल भाषा का प्रयोग होता था।

Scanned with CamScanner